सनातन संस्था एवं

हिन्दू जनजागृति समिति

धर्मशिक्षा फलक

धर्माचरणका शास्त्र एवं महत्त्व समझनेपर

वह उचित पद्धतिसे और भावपूर्वक होता है ।

इससे फलप्राप्ति अधिक होती है । धर्माचरणके साथ

स्वभाषा, स्वसंस्कृति एवं स्वराष्ट्र के प्रति अभिमानका

पोषण करनेवाली शिक्षाप्रणालीके कारण, राष्ट्र एवं धर्म

की स्थिति दृढ होती है । इसी दिशामें यह ग्रन्थ एक प्रयास है ।

संकलनकर्ता

परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं सद्गुरु डॉ. चारुदत्त प्रभाकर पिंगळे

卐 अनुक्रमणिका 卐

फलकोंके विषय	संख्या	पृष्ठ क्र.
१. पश्चिमी नहीं; हिन्दू संस्कृतिका पालन करें ! (जन्मदिन, उद्घाटन, दीपप्रज्वलन, सात्त्विक वेशभूषा)	१२	७
२. हिन्दू धर्मके अन्तर्गत आचारोंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार (वस्त्र, कुमकुमधारण, आहार, भोजन इत्यादि)	६	१०
३. धार्मिक विधियोंका अध्यात्मशास्त्र समझ लें ! (विवाह एवं मृत्युपरान्तके क्रियाकर्म)	६	१३
४. देवताओंकी उपासना और उत्सवों सम्बन्धी मार्गदर्शन (श्री गणपति, श्रीराम, हनुमान, शिव, दत्त, श्रीकृष्ण, देवी आदि)	१२	१६
५. देवालयमें दर्शन कैसे करें तथा साधना सम्बन्धी मार्गदर्शन	६	२२
६. आपातकालकी तैयारीके रूपमें औषधीय वनस्पतियां उगाएं !	२	२५
७. भाषा, इतिहास एवं राष्ट्र प्रेमी बनें !	१०	२६
८. हिन्दू धर्म, मानबिन्दु एवं धर्मबन्धुओं की रक्षा करें !	१४	३१
९. हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी आवश्यकता एवं दिशा	४	३८

(उपरोक्त धर्मशिक्षा फलकोंके अतिरिक्त अन्य फलक भी उपलब्ध हैं ।)

धर्मशिक्षा फलकोंके प्रायोजन हेतु निवेदन !

ग्रन्थमें प्रस्तुत 'धर्मशिक्षा फलक' राष्ट्र एवं धर्मकार्य के रूपमें स्वयं प्रायोजित कर सकते हैं अथवा अन्योंके सौजन्यसे प्रदर्शित कर सकते हैं । प्रायोजकोंकी इच्छा हो, तो फलकपर नीचे उनका नाम भी छाप सकते हैं । ऐसे कुछ नमूने 'पृष्ठ ७ एवं १०' पर प्रस्तुत हैं । फलकोंकी मांगके लिए सम्पर्क : 9322315317

यह ग्रन्थ स्वयं पढें तथा अन्योंको भी भेंटस्वरूप दें !